

सखि जे हों-न-विरज की ओर
 देड़े री मोहे हूलबलिया ॥२॥

इक तो दही को दान वो माँगे
 फोर मटकिया तुरतई भागे
 दई बाहियाँ-री ॥२॥ मोरी मरोर
 देड़े री मोहे-----

सखि जे हों-न-----

पीढ़े से मोरी अंगिया तानी
 खूब कही पर एक न मानी
 भगी खूबई लगाखें-मैं तो जोर
 देड़े री मोहे-----

सखि जे हों-न-----

रात-रात भर नाच नचावे
 राधा के संग रास रचावे
 डूबी चिन्ता में ॥२॥ हो गई भोर
 देड़े री मोहे-----

सखि जे हों-न-----

रे रे सखी ओ की सूरत प्यारी
मन-बसिया में द्रवि है न्यारी
बसो नैनो में ॥२॥ मोरे चितचोर

देड़े रे मोहे-----

सखि जे हो-न-----

देख यशोदा. तेरो लाला
तोड़ गयो मोरे कान को बाला
चलो तो पे ॥२॥ "क्षीबाबाक्षी" नहीं जोर

देड़े रे मोहे-----

सखि जे हो-न-----